BA(H) Part -I, Paper -II

Dr. Gautam kumar
Guest Teacher
Department of Political Science,
A.N.D College, Shahpur Patory, Sam

गोपाल कृष्ण गोखले के सामाजिक विचार

गोपाल कृष्ण गोखले के सामाजिक विचार निम्न प्रकार हैं : -

1. सामाजिक सहिष्णुता और सद्भावना के प्रतीक - गोपाल कृष्ण गोखले सामाजिक सहिष्णुता, समानता और सद्भाव के प्रबल समर्थक थे। वे समाज में व्याप्त जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता की भावना के प्रखर विरोधी थे। वे देश के विकास में जाति व्यवस्था को बाधक मानते थे तथा जाति-व्यवस्था के उन्मूलन के पक्षधर थे। वे भारतीयों में व्याप्त जातीय संकीर्णता से मुक्त तथा अस्पृश्यता का अन्त कर, जातीय समानता और सहिष्णुता की स्थिति स्थापित करने पर बल दिया। वे भारत के दलित वर्ग के उद्धार के प्रति विशेष रूप से प्रयत्नशील थे। उनका मानना था कि जब तक हम अपने देश के दलितों का सभी प्रकार के अधिकार प्रदान नहीं कर देते हैं तब तक हम अंग्रेजों से अपने लिए समान अधिकार की मांग नहीं कर सकते हैं। अतएव गोखले समाज सुधारक के रूप में भारत में व्याप्त जातीय व्यवस्था अथवा जातीय भेदभाव आधारित अस्पृश्यता की भावना का अंत करना चाहते थे। वे जाति समानता के आधार पर समाज में सभी प्रकार के व्याप्त अस्पृश्यता की भावना का अन्त करना चाहते थे। उनकी यह भी मान्यता थी कि जब तक दलित वर्ग का उद्धार नहीं हो जाता है और जातीय समानता की स्थिति कायम नहीं हो जाती है तब तक देश स्वशासन के लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता।

2. नस्ल एवं रंग-भेद के विरोधी - गोपाल कृष्ण गोखले जातीय असमानता के समान ही नस्ल एवं रंग-भेद के प्रबल विरोधी थे। उन्होंने महात्मा गांधी के नेतृत्व में दक्षिण अफ्रीका में चलने वाले नस्ल एवं रंग-भेद विरोधी आंदोलन का समर्थन किया एवं उससे उचित ठहराया। वे समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार के मानवीय असमानताओं यथा - रंग, धर्म, जाति, वर्ण इत्यादि के विरोधी थे तथा सभी प्रकार के मानवीय

समानताओं के निष्ठावान समर्थक थे। वे इन समानता को मानव समाज की उन्नति के लिए आवश्यक मानते थे।

3. धार्मिक सहिष्णुता और एकता के समर्थक – गोपाल कृष्ण गोखले न सिर्फ हिंदू समाज में व्याप्त जातीय असमानता और असहिष्णुता के प्रबल विरोधी थे वरन् वे बहुल धर्मवादी भारतीय समाज की पूर्ण समानता एवं एकता के भी प्रबल समर्थक भी थे। गोखले ने कहा था कि, "भविष्य का भारत केवल हिंदू या मुसलमान भारत नहीं होता। इस भारत में आज विद्यमान सभी धार्मिक समुदाय सम्मिलित होंगे चाहे वह हिंदू हो, मुसलमान हो, फारसी हो या इसाई हो। इसी मान्यताओं को उन्होंने भारत सेवक संघ के संविधान में भी उद्देश्य के रूप में स्वीकार किया है। वे उदार मानवीय मूल्यों पर आधारित उच्चतर मानव धर्म की कल्पना करते थे। वे सभी धर्मों को मानने वाले को समान तथा धार्मिक ऐक्य की भावना को प्रबल बनाना चाहते थे। गोखले का मानना था कि बिना धार्मिक एकता के लक्ष्य को प्राप्त किए बगैर भारत के लिए स्वशासन का लक्ष्य प्राप्त करना कठिन ही नहीं असंभव था। गोखले अपनी उदारवादी मान्यताओं के कारण धार्मिक तथा सामाजिक उदारता आधारित सहिष्णुता, सद्भाव और एकता के प्रबल पक्षधर थे और चाहते थे कि भविष्य के भारत का इन्हीं आदर्शों के आधार पर निर्माण किया जाय।